Module : 2

सतत विकास एवं विद्यालय प्रबन्धन

● डॉ स्वधा प्रकाश ● श्री रंजन कुमार झा

एक अच्छी शैक्षणिक संस्था वह है जिसमें प्रत्येक छात्र का स्वागत किया जाता है और उसकी देखभाल की जाती है, जहाँ एक सुरक्षित और प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण उपलब्ध होता है, जहाँ सभी छात्रों को सीखने के लिए विविध प्रकार के अनुभव उपलब्ध कराए जाते हैं और जहाँ सीखने के लिए अच्छे आधारभूत ढांचे एवं उपयुक्त संसाधन उपलब्ध रहते हैं। ये सब प्राप्त करना प्रत्येक शिक्षा संस्थान का लक्ष्य होना चाहिए। साथ ही विभिन्न संस्थानों के बीच तथा शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर परस्पर सहज 'जुड़ाव और समन्वय' आवश्यक है।

"A good education institution is one in which every student feels welcomed and cared for, where a safe and stimulating learning environment exists, where a wide range of learning experiences are offered, and where good physical infrastructure and appropriate resources conducive to learning are available to all students. Attaining these qualities must be the goal of every educational institution., However, at the same time, there must also be seamless integration and coordination across institutions and across all stages of education".

प्रस्तावना

धरती से चाँद तक और असीम अन्तरिक्ष तक पहुंची मानव विकास की यह यात्रा आधुनिक सभ्यता की प्रगति का परिचायक है। आदिम अवस्था से लेकर आधुनिक मशीनी युग तक पहुंची मानव सभ्यता ने अपने अस्तित्व को नई पहचान दी है। विकास का यह क्रम जिन सीढ़ियों से गुजरा उसमें हमने अपने लिए जंगल काट कर जमीन, घर, इमारतें बनाई, नदियों पर बाँध और पुल बनाए, पहाड़ों को काटकर रास्ते बनाए, बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्नत बीज, उर्वरक, और नहरों का जाल बिछाया और दिन-प्रतिदिन नए आविष्कारों और तकनीक ने हमारे कल-कारखानों को नई उड़ान दी। पर विकास का यह क्रम किसी विडंबना से कम नहीं है। कल तक जहाँ हरियाली और ठंडी हवा थी आज वहाँ कंक्रीट के जंगल और ग्लोबल वार्मिंग है। बहती हुई नदियों की जगह गंदे नालों ने ले ली है। बदलते परिवेश में पेड़-पौधों और जीव जंतुओं की कई प्रजातियों के विलुप्त होने से हम निरंतर जैव संकट की तरफ बढ़ रहे हैं । निरंतर बढ़ते तापमान और कम होते जल के बीच जहाँ मनुष्य का अस्तित्व भी चुनौती बन चुका है वहीं मानव सभ्यता की यात्रा का यह स्वरुप ही आने वाले भविष्य का सबसे बड़ा सवाल है। क्या हम अपने बच्चों को शस्य-श्यामला धरती का वही स्वरुप दे पाएंगे जिसने हमारा पालन-पोषण किया ? क्या हम अपनी जीवन शैली और विकास के क्रम को नई दिशा देकर उसे विनाश की तरफ बढ़ने से रोक सकते हैं ? क्या हम प्रकृति के साथ एक बार फिर सामंजस्य बनाकर चलने को तैयार हैं ?

ये सभी सवाल आज हमारे भविष्य की तैयारी हैं जिनके जवाब के लिए हमें आने वाली पीढी को तैयार करना होगा। विद्यालयों में जहाँ एक तरफ हम अपने बच्चों में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान एवं ICT जैसे कौशल का विकास कर रहे हैं, वहीं 'सतत विकास' (Sustainable Development) के विविध आयामों के प्रति अपने बच्चों को संवेदनशील बनाना भी हमारी जिम्मेदारी है। यह नेतृत्व का वह पक्ष है जो न सिर्फ विद्यालय एवं उसमें पढ़ रहे बच्चों को, बल्कि पूरे समुदाय को एक नई दिशा दे सकता है। विद्यालय प्रमुख के रूप में यह आवश्यक है कि हम इस विषय की गंभीरता को समझें और इस दिशा में सकारात्मक प्रयास के लिए प्रतिबद्ध रहें ।

अनुक्रमणिका

- सतत विकास की अवधारणा
- सतत विकास और हमारे विद्यालय
- बिहार में सतत विकास की दशा एवं दिशा
- एकल प्रयास का महत्व

सतत विकास की अवधारणा

सतत विकास की संकल्पना गुणवत्तापूर्ण जीवन शैली पर आधारित है। जीवन जीने की गुणवत्ता में होने वाला निरंतर विकास ही सतत विकास का द्योतक है। प्रायः हम चल-अचल संपत्ति के संग्रहण और वृद्धि को ही उन्नति का आधार मान लेते हैं। परन्तु हमारा वास्तविक विकास हमारी गुणवत्तापूर्ण जीवन शैली पर निर्भर करता है जो न सिर्फ हमें बल्कि पूरे समाज को प्रभावित करता है। इस बात को नीचे बॉक्स में दिए गए उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं।

श्यामल बड़ा ही समझदार व्यक्ति था। घर के पास एक छोटी सी जोत पर वह खेती करता था। परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए उसे मजदूरी भी करनी पड़ती थी। परिवार की आय कम होने पर भी उसका रहन-सहन बड़ा ही अच्छा था। वह हमेशा अपने घर को साफ़ रखता। यहाँ तक कि रसोई से निकलने वाले फल-सब्जियों के छिलके को भी वह अपने घर के पीछे बने गड्ढे में डालकर उसकी खाद बनाता। बाद में वही खाद आस-पास के पौधों में डाल देता। उसने अपने बच्चों को भी सख्त हिदायत दी थी कि जब भी वे बाजार जाएं तो अपने साथ थैला जरूर लेकर जाएं और जितना हो सके प्लास्टिक का कम से कम इस्तेमाल करें। अपने और अपने बच्चों के जन्मदिन पर जब हर बार वह एक पेड़ गाँव के आने जाने वाले रास्ते पर लगाता तो सभी गाँव वाले उसका मजाक उड़ाते। पर वह हँसकर इतना ही कहता, "मुझे ही नहीं पूरी दुनियाँ को आज पेड़ों की जरूरत है।"

आइये अब श्यामल की जीवन शैली से हम अपनी और अपने आस-पास के लोगों की जीवन शैली की तुलना करते हैं। क्या हम ऐसा कोई कार्य कर पाते हैं जिससे हमारे आस-पास के वातावरण पर भी कोई सकारात्मक प्रभाव पड़े ? जरा सोचें कि यदि प्रत्येक व्यक्ति श्यामल की तरह ही अपने जीवन में प्रकृति के संरक्षण के लिए प्रयास करे तो हम अपनी अगली पीढ़ी को भी संसाधनों से हरी-भरी धरती का उपहार दे सकेंगे।

विकास की यही संकल्पना 'सतत विकास' के नाम से जानी जाती है। सतत विकास का अर्थ सभी के लिए सुरक्षित एवं संवर्धित भविष्य का निर्माण करना है। यह विकास का वह प्रारूप है जो मानव संसाधन के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उसके स्थायित्व को भी सुनिश्चित करता है। पर्यावरण तथा विकास पर विश्व आयोग (1987) की रिपोर्ट के अनुसार "भावी पीढ़ी की जरूरतों से समझौता किये बगैर वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करना ही सतत विकास है।" इसके प्रमुख आयामों को नीचे दिए गए चित्र द्वारा समझा जा सकता है :-

हम आज जिस दुनिया में जी रहे हैं वह हमें एक बेहतर कल का सन्देश देने के बजाय विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय, आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक संकटों से गुजर रही है। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में होने वाले राजनैतिक तनाव एवं युद्ध की परिस्थितियों ने एक तरफ जहाँ गंभीर पर्यावरणीय संकट पैदा किया है वहीं हमारे सामाजिक – सांस्कृतिक विकास के मार्ग को भी अवरुद्ध किया है। विभिन्न समुदायों के बीच बढ़ते विवादों के कारण आर्थिक विकास भी बाधित होता है। सतत विकास की मौलिक अवधारणा 'शांति एवं समृद्धि' की ओर बढ़ते मानव समाज के संकल्प को लक्ष्य करती है जिसके विविध उद्देश्य दिए गए :-

उपर्युक्त सभी उद्देश्य सतत विकास के चार प्रमुख स्तम्भ के परिचायक हैं :

1. सतत पर्यावरणीय विकास
2. सतत आर्थिक विकास
3. सतत सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास
4. सतत राजनैतिक विकास

ये सभी स्तम्भ एक साथ मिलकर ही हमारे समृद्ध एवं खुशहाल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करते हैं। आइये, सतत विकास की अवधारणा को समझकर अब हम एक विद्यालय में सतत विकास की संकल्पना के विविध स्वरूपों को समझने का प्रयास करें।

***

सतत विकास और हमारे विद्यालय

सतत विकास की अवधारणा पर चर्चा करते समय हम सभी को लगता है कि विकास सम्बन्धी नीतिगत निर्णय राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सरकार द्वारा लिए जाते हैं। फिर ऐसी परिस्थिति में शिक्षक एवं विद्यालय की क्या भूमिका है ? इस सन्दर्भ में नीचे बॉक्स में दिए गए उदाहरण को ध्यान से पढ़ें :

सारण जिले के सुदूरवर्ती इलाके में एक प्राथमिक विद्यालय है जहाँ श्री निर्मल ओझा प्रधानाध्यापक थे। जब उन्होंने पदभार संभाला था तो विद्यालय की परिस्थितियाँ विषम थीं। छात्रों की अनियमित उपस्थिति, पठन-पाठन में अरुचि, साफ़-सफाई के प्रति उदासीनता आदि कई चुनौतियां उनके सामने थीं। धीरे-धीरे उन्होंने विद्यालय की व्यवस्था को नियमित एवं सुचारू रूप देने के लिए छोटे-छोटे प्रयास किये। सबसे पहले उन्होंने विद्यालय में बनने वाले मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता में सुधार किया। भोजन की गुणवत्ता में हुए इस सुधार ने उन्हें विद्यालय के छात्रों एवं समुदाय का विश्वास जीतने में मदद की। क्रमशः उन्होंने बच्चों को भोजन के पहले हाथ धोने, साफ़-सफाई से रहने के लिए जब प्रेरित किया तो उसका प्रभाव बच्चों की आदतों में दिखने लगा। चेतना सत्र में अब बच्चे पहले की अपेक्षा अधिक व्यवस्थित रहने लगे। नियमित कक्षाओं के साथ-साथ उन्होंने विद्यालयों में आयोजित होने वाले अन्य कार्यक्रमों के प्रति बच्चों को सजग एवं सक्रिय बनाने का प्रयास किया जिसके परिणामस्वरुप हर साल बच्चे जब स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस के कार्यक्रम करते तो बच्चों का बढ़ता आत्मविश्वास, उनके विचार और उनकी प्रतिभा में होते विकास को देखकर एक प्रधानाध्यापक के रूप में उनकी सफलता सबके लिए प्रेरणा थी।

दिए गए उदाहरण से कई सवाल उठते हैं जैसे –

- इस उदाहरण में ऐसा क्या विशेष नवाचार है ?
- विद्यालय में आए इस परिवर्तन का सतत विकास से क्या सम्बन्ध है ?

यह समझना आवश्यक है कि सतत विकास की अवधारणा बड़े नीतिगत निर्णयों अथवा बड़े अभियान एवं कार्यक्रमों पर ही निर्भर नहीं बल्कि हमारे दैनिक जीवन में आ रहे गुणकारी परिवर्तनों पर आधारित है। इस दृष्टि से एक बार पुनः दिए गए उदाहरण को निम्नांकित बिन्दुओं की सहायता से समझने का प्रयास करते हैं :

- भोजन में आई गुणवत्ता से बच्चों के पोषण एवं स्वास्थ्य का विकास हुआ।
- प्रधानाध्यापक की सहज निष्ठा ने विद्यालय एवं समुदाय के बीच सामाजिक सहयोग का मार्ग प्रशस्त किया।
- बढ़ते परस्पर विश्वास से बच्चों में स्वच्छ आदतों का विकास हुआ।
- विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों में बच्चों की बढ़ती सहभागिता से उनमें न सिर्फ साक्षरता बल्कि

रचनात्मक सम्प्रेषण कौशल, सृजनात्मकता एवं आत्मविश्वास जैसे आवश्यक जीवन कौशल का भी विकास हुआ।

- प्राथमिक स्तर पर जहाँ शिक्षा का मौलिक उद्देश्य बच्चों में आवश्यक साक्षरता, स्वच्छ आदतों एवं मौलिक जीवन कौशल का विकास करना है, इन सभी उद्देश्यों को बच्चों तक पहुंचाने में प्रधानाध्यापक सफल रहे।
- सतत विकास की दृष्टि से देखें तो इन सभी उद्देश्यों का प्रभाव दीर्घकालिक रूप से व्यवस्था एवं समाज पर रहेगा जहाँ भविष्य के नागरिक स्वस्थ, स्वच्छ एवं रचनात्मक जीवन शैली की तरफ बढ़ सकेंगे। यह जीवन शैली ही कालांतर में हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त करेगी।

सतत विकास की दिशा में शिक्षा की मानक अवधारणा को परिभाषित करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा दिए गए शिक्षा के चार स्तम्भ भी इन्हीं प्रतिमानों पर आधारित हैं। नीचे दिया गया आरेख शिक्षा के चार स्तंभों को दर्शाता है :

सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वी नाव धीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

हमारा देश शिक्षा की पुरातन परंपरा का संवाहक रहा है जहाँ आदिकाल से ही शिक्षा को सतत विकास का पर्याय माना गया है। वेद का यह श्लोक संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित शिक्षा के मानक स्तम्भ को ही परिभाषित करता है। आइये इसी क्रम में हम एक और उदाहरण देखते हैं जहाँ नियमित व्यवस्था के साथ-साथ विशिष्ट कार्यक्रमों के माध्यम से प्रधानाध्यापक के नेतृत्व में विद्यालय ने सतत विकास की दिशा में नई राह दिखाई :

विद्यालय प्रधानाध्यापक के रूप में यह बड़ी जिम्मेदारी है कि विविध कार्यों के लिए प्राप्त राशि का व्यय उचित रूप से किया जाए। समस्तीपुर जिले में राजकीय मध्य विद्यालय की प्रधानाध्यापिका ने जब विद्यालय विकास मद में प्राप्त राशि से विद्यालय में शौचालय बनवाने के साथ-साथ 'Sanitary Pad Vending Machine' लगवाई तो विद्यालय में पढ़ने वाली छात्राएँ संकोच से भर गई। इस बात को समझते हुए प्रधानाध्यापिका के रूप में श्रीमती जलाल ने इस बात को विद्यालय में नियमित रूप से आयोजित होने वाली अभिभावक बैठक में रखने का प्रयास किया जहाँ उन्हें अधिक सफलता नहीं मिली। एक बार फिर उन्होंने विद्यालय में आयोजित होने वाले

'मीना मंच' के कार्यक्रम में एक महिला डॉक्टर और समुदाय में काम करने वाली आशा दीदी को बुलाकर न सिर्फ विद्यालय की बच्चियों बल्कि सभी महिलाओं के बीच मासिक माहवारी सम्बन्धी जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया। इसी मंच में उन्होंने बच्चियों के लिए 'Pad Bank' की भी शुरुआत की। उन्होंने और विद्यालय की शिक्षिकाओं ने खुद भी जब इस प्रयास में हिस्सा लिया तो धीरे-धीरे कुछ बच्चियों ने 'Sanitary Pad' और 'Vending Machine' का प्रयोग शुरू किया। उन्हें देखकर क्रमशः बाकी लड़कियों की भी झिझक कम हुई और अभिभावकों के बीच भी इस बात का विरोध कम हो गया। इस क्रम में जब कक्षा में बच्चियों की उपस्थिति अधिक नियमित हुई और उनका आत्मविश्वास क्रमशः बढ़ने लगा तो श्रीमती जलाल एवं सभी शिक्षिकाएं खुश थीं।

यह उदाहरण एक सफल नेतृत्व का परिचायक है जहाँ स्वस्थ समाज की आधारशिला रखने के साथ-साथ लैंगिक आधार पर व्याप्त सामाजिक एवं सांस्कृतिक विसंगतियों को दूर करने का भी प्रयास किया जा रहा है। ऐसे प्रयास ही सतत विकास को नई दिशा एवं गति प्रदान करते हैं।

सतत विकास की इन्हीं अवधारणाओं पर आधारित नीचे बॉक्स में दिया गया एक और उदाहरण देखें जहाँ प्रधानाध्यापक के कुशल नेतृत्व ने न सिर्फ अपने शैक्षणिक और सामाजिक दायित्व का निर्वहन किया बल्कि पर्यावरण संरक्षण और बच्चों के हस्त-कौशल के विकास का भी मार्ग प्रशस्त किया।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर विद्यालय में कार्यक्रम आयोजित किया जाना था। श्री सुखदेव सोच में थे कि इस वर्ष इस कार्यक्रम का आयोजन किस प्रकार किया जाए। उन्होंने सभी शिक्षकों/शिक्षिकाओं की बैठक बुलाई जिसमें सभी ने अपने विचार रखे। किसी का मत था कि स्थानीय स्तर पर किन्हीं गणमान्य व्यक्ति को बुलाकर छात्र/छात्राओं के बीच पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी वक्तव्य दिलवाया जाए तो किसी ने इस सम्बन्ध में जागरूकता मंच के अंतर्गत पोस्टर के साथ प्रभात फेरी, नुक्कड़ नाटक और वृक्षारोपण की सलाह दी। वृक्षारोपण की सलाह उन्हें पसंद आई पर वे जानते थे कि अभी जून महीने में भी इतनी बारिश नहीं हो रही थी कि लगाए गए पौधे अपनी जड़ पकड़ सकें। इस बात पर जब उन्होंने अपने साथी शिक्षकों का ध्यान दिलाया तो वे भी सहमत थे।

बीते वर्षों में उन्होंने जागरूकता अभियान पर कार्यक्रम किया था इसलिए इस वर्ष वे इस कार्यक्रम को नए रूप में करना चाहते थे। तभी एक शिक्षिका ने कहा, "क्यूँ न इस वर्ष हम इस दिन से 'मीना मंच' की तरह ही एक 'हरित मंच' बनाकर एक वार्षिक कार्यक्रम की शुरुआत करें जिसमें बच्चों को 'Reuse, Reduce and Recycle' की अवधारणा के व्यवहारिक अनुभव से जोड़ने का प्रयास किया जाए। इसके अंतर्गत हम बच्चों को अलग-अलग तरह के 'Waste Management' के कौशल के प्रति न सिर्फ जागरूक बनाएंगे बल्कि उनसे इस सम्बन्ध में कार्य भी करवाएंगे। जैसे – प्लास्टिक की पन्नियों या पुरानी मच्छरदानी से चटाई बनाना, रद्दी अखबार से थैले बनाना, गीले कचड़े से कम्पोस्ट बनाना, बेकार पड़ी लकड़ियों से उपयोगी सामान बनाना आदि। प्रस्ताव सभी को पसंद आया और श्री सुखदेव इस वर्ष के 'हरित मंच' के संचालन का दायित्व शिक्षिका को देकर बहुत संतुष्ट थे। उनके नेतृत्व में साल भर कक्षा 6-8 के बच्चों ने कई तरह की चीजें बनाई और पर्यावरण के प्रति न सिर्फ उनकी जागरूकता बढ़ी बल्कि कई प्रकार के कौशल भी उन्होंने सीखे।

हम सभी इस बात से अवगत हैं कि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को आने वाले भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करना है। हमारे द्वारा किए गए छोटे-छोटे प्रयास ही बच्चों को नई दिशा देते हैं। उनकी सोच और हुनर को जब उचित मार्गदर्शन मिलता है तो उनके अन्दर सकारात्मक सामाजिक मूल्यों का विकास होता है। उनका दृष्टिकोण दूरगामी बनता है। शिक्षा के माध्यम से यदि विविध विषयों एवं भविष्य की चुनौतियों के प्रति बच्चों में जागरूकता विकसित करें, उनके हाथों को नए हुनर देकर उनकी दक्षता का विकास करें और साथ ही उन्हें अपने वातावरण के सभी अंगों, पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं तथा मानवीय समाज की विषमताओं के प्रति संवेदनशील बनाएं तो सतत विकास की सभी कड़ियों को जोड़ सकेंगे। हमारे विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों का बढ़ता आत्मविश्वास ही एक नए बदलाव का संकेत है जिससे आने वाली पीढ़ी सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ सकेगी।

***

बिहार में सतत विकास की दशा और दिशा

मानव सभ्यता की शुरुआत से ही देश और दुनियाँ के पैमाने पर बिहार का एक गौरवशाली अतीत रहा है। वह चाहे दुनिया का सबसे पहला गणतंत्र 'वैशाली' हो या फिर 'नालंदा विश्विद्यालय' का स्वर्णिम इतिहास, बिहार की बौद्धिक उन्नति की इस यात्रा का साक्षी 'बोधिवृक्ष' आज भी सम्पूर्ण विश्व के लिए विस्मय का केंद्र है। बिहार की धरती से ही पहली बार किसी राजतंत्र के इतिहास में एक सशक्त सम्राट ने अहिंसा और 'धम्म' की राजनीति से सतत विकास के सभी प्रतिमानों की आधारशिला रखी थी जिसमें न सिर्फ मनुष्य बल्कि वन्य सम्पदा एवं जीव-जंतुओं के भी संरक्षण की विधि स्थापित की गई। परन्तु कालक्रम की विडंबना यह है कि आधुनिक बिहार सतत विकास के कई मानकों पर संघर्ष करता दिखाई देता है। सामाजिक असमानता और आर्थिक विपन्नता से संघर्ष करते बिहार में आज पर्यावरणीय संकट भी गहराता जा रहा है। बदलता ऋतुचक्र, बढ़ता तापमान, घटता जलस्तर, बढती जनसंख्या और सिकुड़ती हुई कृषि योग्य भूमि भविष्य के आसन्न संकट की ओर इशारा कर रहीं हैं। गौर से देखा जाए तो इन सभी समस्याओं के मूल में शैक्षणिक पिछड़ापन मूलभूत समस्या है।

वर्ष 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार बिहार की साक्षरता दर 61.80% है जिसमें पुरुष साक्षरता 71.20% एवं महिला साक्षरता दर 51.50% है। यद्यपि पहले की तुलना में बिहार में साक्षरता दर बढ़ रही है फिर भी राष्ट्रीय स्तर से तुलना करने पर यह राष्ट्रीय औसत 74.04% से 12.24 % कम है। पुरुष एवं महिला साक्षरता में भी यह राष्ट्रीय औसत से क्रमशः 10.94 एवं 13.96 प्रतिशत कम है। यहाँ कुछ बातें शोचनीय हैं। राष्ट्रीय औसत से बिहार की साक्षरता दर का कम होना और पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की साक्षरता दर में कमी चिंता का विषय है। इसके लिए बच्चियों की शिक्षा पर अधिक ध्यान देते हुए हमें निरंतर सामाजिक रूप से व्याप्त लैंगिक असमानता को दूर करने का प्रयास करना होगा। लैंगिक असमानता को दूर करना सतत विकास का प्रमुख उद्देश्य है जिसके लिए सरकार द्वारा भी कई कदम उठाए जा रहे हैं। इनमें से कई योजनाएँ विद्यालयों में बच्चियों की शिक्षा को प्रोत्साहित कर रही हैं। नीचे बॉक्स में दिया गया उदाहरण ध्यान से पढ़ें।

सुरती अपने घर में सबसे बड़ी थी। माँ के कामों में हाथ बटाने के बाद वह अपने चार साल के भाई की भी देखभाल करती थी। पर जब उसका भाई 6 साल का हुआ और माँ ने उसका दाखिला नजदीक के विद्यालय में करवाया तो उसे अच्छा नहीं लगा। उसे इस बात का दुःख था कि माँ ने उसे पढ़ने क्यूँ नहीं भेजा ? माँ ने उसे समझाया कि उनके पास उतने पैसे नहीं हैं कि वह दोनों बच्चों को पढ़ा सकें। स्कूल की पोशाक और किताबों का खर्च वो एक के लिए ही कर सकती हैं। थोड़ा बहुत पढ़कर भी सुरती क्या करेगी। आगे पढ़ने के लिए तो उसे दूर के विद्यालय में जाना पड़ेगा। उसका भाई तो चला जाएगा पर सुरती इतनी दूर कैसे जाएगी ? फिर स्कूल में न शौचालय है और न कोई महिला शिक्षिका। ऐसे में सुरती का घर पर रहना ही ठीक है। माँ की बातें सुरती समझ तो नहीं पाई पर उसने फिर कुछ नहीं कहा।

सुरती जैसी कई लड़कियों की समस्याओं को समझकर ही सरकार द्वारा कई कार्यक्रम चलाए गए। नीचे बने आरेख में इन कार्यक्रमों का समेकित रूप है। क्या आपको लगता है कि ये सभी कार्यक्रम सतत विकास की दिशा में उठाए गए सार्थक प्रयास हैं ?

इनके अतिरिक्त 'किशोरी स्वास्थ्य कार्यक्रम' भी चलाए जा रहे हैं जो स्वस्थ नागरिक एवं स्वस्थ बिहार के भविष्य निर्माण की महत्वपूर्ण कड़ी है। बिहार एक तरफ जहाँ सतत विकास से जुड़े अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन कर रहा है वहीं शिक्षा के माध्यम से छात्र/छात्राओं को नई तकनीक एवं प्रविधियों से जोड़कर उनकी दक्षता बढाने के लिए भी प्रयासरत है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यालयों में गतिविधि आधारित शिक्षण, प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण, ICT के प्रयोग एवं कला तथा खेल-कूद को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है।

प्रधानाध्यापक के रूप में जहाँ एक व्यक्ति विद्यालय का प्रशासनिक एवं वित्तीय प्रबंधक होता है वहीं विद्यालय के शैक्षणिक विकास का भी नेतृत्वकर्ता होता है। प्रधानाध्यापक, अर्थात् वह अपने विद्यालय का प्रधान अध्यापक भी है जिनकी अपने विद्यालय में संचालित शैक्षणिक क्रियाकलापों की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका है। वैशाली जिला के सेंदुआरी प्रखंड का यह उदाहरण विद्यालय के शैक्षणिक वातावरण को समृद्ध बनाने में

एक प्रधानाध्यापक की भूमिका को प्रस्तुत करता है।

विद्यालय के विज्ञान शिक्षक बड़े उत्साहित थे। निरीक्षण पर आए पदाधिकारी को वे अपने विद्यालय की विज्ञान प्रयोगशाला दिखाना चाहते थे। न सिर्फ प्रयोगशाला बल्कि उसमें वे कक्षा 7 के बच्चों के साथ विज्ञान के कुछ प्रकरणों का भी प्रदर्शन करना चाहते थे। विज्ञान प्रयोगशाला में चल रही कक्षा और छात्रों का उत्साह ही विद्यालय प्रधानाध्यापक की सफलता दिखा रही थी। अपने शिक्षकों और छात्रों का उत्साह बढ़ाते हुए जब उन्होंने कहा कि मैं अपने बच्चों को विज्ञान के प्रति जिज्ञासु बनाना चाहता हूँ ताकि वे आगे बढ़कर अच्छा करें तो एक शैक्षणिक नेतृत्वकर्ता के रूप में उनका लक्ष्य सपष्ट परिलक्षित हो रहा था।

ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ प्रधानाध्यापक ने अपने कुशल प्रबंधन द्वारा न सिर्फ अपने प्रशासनिक एवं वित्तीय कार्यों का निर्वहन किया है बल्कि अपने साथी शिक्षकों के साथ मिलकर विद्यालय के शैक्षणिक परिदृश्य को भी नया आयाम दिया है।

सामाजिक असमानता दूर करने एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में प्रयासरत हमारे विद्यालय बुनियादी सुविधाओं को भी विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं जिन्हें निम्नांकित आरेख के माध्यम से दर्शाया गया है :

एक प्रधानाध्यापक के रूप में विद्यालय में बुनियादी सुविधाओं का प्रबंध करना एक प्रधानाध्यापक के लिए बड़ी चुनौती है। उपलब्ध भौतिक एवं वित्तीय संसाधनों के आधार पर ही विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं का प्रबंध किया जाता है। परन्तु एक प्रधानाध्यापक के रूप में हमारी दृष्टि व्यापक रहनी चाहिए जिससे समय आने पर यदि विद्यालय के भौतिक संसाधनों का उन्नयन करना हो तो हम सतत विकास से जुड़े सभी बुनियादी मूलभूत संरचनाओं का विकास कर सकते हैं। ऐसी संरचनाएं और उनका प्रबंधन बच्चों को पर्यावरण से सम्बन्धित सभी चुनौतियों से अवगत भी कराता है और इस सन्दर्भ में उनके व्यावहारिक कौशल का भी विकास करता है।

एकल प्रयास का महत्व

सतत विकास के क्रम में कुछ सवाल हमेशा एक व्यक्ति को निरुत्साहित करते हैं। जैसे –

- क्या मेरे द्वारा लगाया गया एक पेड़ पूरे पर्यावरण को बदल देगा ?
- क्या मेरे पेड़ नहीं काटने से जंगल बच जाएगा ?
- क्या मेरे साईकिल चलाने से प्रदूषण ख़त्म हो जाएगा ?
- क्या मेरे पानी बचाने से नदियाँ नहीं सूखेंगी ?
- क्या मेरे बिजली कम खर्च करने से संसाधनों का संरक्षण हो जाएगा ?
- क्या मेरे कागज़ बचाने से दुनिया बच जाएगी ?
- क्या मेरे प्लास्टिक नहीं इस्तेमाल करने से प्लास्टिक ख़त्म हो जाएगा ?

ये और ऐसे कई सवाल हमें हिलाते हैं। पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी सभी बातें बनावटी लगने लगती हैं और धीरे धीरे इन बातों से हमारा विश्वास उठने लगता है। आइये इसी सन्दर्भ में एक उदाहरण देखें। शैक्षणिक परिभ्रमण पर अपने विद्यालय के छात्रों के साथ पटना पहुंचे मुंगेर के एक प्रधानाध्यापक का संस्मरण अविस्मरणीय है।

बच्चों के साथ जैसे ही गंगा घाट पहुंचे वहां फैली गंदगी और दुर्गन्ध ने सभी को परेशान कर दिया। किताबों में छपी निर्मल गंगा की छवि इतनी अलग देखकर बच्चों को ही नहीं, बड़ों को भी आश्चर्य था। चारों तरफ कहीं प्लास्टिक की थैलियाँ, कहीं चाय के कप और कुल्हड़, कहीं कागज़ के ठोंगे तो कहीं कुछ कपडे और फूल भी पड़े थे। सभी मायूस होकर लौटने लगे, तभी प्रधानाध्यापक को सूझा कि क्यूँ न इसी क्रम में सब मिलकर घाट की सफाई करें। बस उन्होंने 10-10 बच्चों की 5 टोली बनाई और शिक्षकों के नेतृत्व में घाट से गन्दगी उठाकर एक थैले में जमा करने को कहा। शुरू में बच्चों ने प्रतिरोध किया तो उन्होंने खुद ही यह काम अकेले करना शुरू किया। देखते ही देखते सभी शिक्षक और छात्र मिलकर इस काम में जुड़ गए और थोड़े ही समय में घाट की सफाई हो गई। फिर वहीं बैठकर सबने साथ लाए नाश्ते का आनंद लिया और बच्चों ने महसूस किया कि साफ़-सफाई और पर्यावरण की रक्षा सबकी जिम्मेदारी है और सबको मिलकर इसके लिए प्रयास करना चाहिए। सभी की नज़र में प्रधानाध्यापक के लिए सम्मान था जिनकी पहल से यह कार्य हुआ था।

प्रधानाध्यापक का यह उदाहरण अनुकरणीय है। विद्यालय सिर्फ जागरूकता मंच नहीं बल्कि छात्र /छात्राओं को वास्तविक जीवन मूल्यों से जोड़ने वाली संस्था है। इसका नेतृत्व भी सतत विकास के सभी उद्देश्यों को लक्ष्य करते हुए एक संवेदनशील इकाई के रूप में किया जाना चाहिए। आज भी बिहार की लोक संस्कृति प्रकृति और मानवीय भावनाओं की संवेदनशीलता की महत्ता का ही उत्सव मनाती है। हमारा खान-पान, वेश-भूषा, तीज

त्योहार और दैनिक जीवन से जुड़ी दिनचर्या जितनी ही संयमित रहेगी, हमारे आस-पास का वातावरण भी उतना ही संतुलित रहेगा।

'संयम और संतुलन' के इन मूल्यों की आधारशिला बच्चे को माता-पिता एवं शिक्षकों से ही प्राप्त होती है। कहते हैं कड़ी से ही कड़ी जुड़ती है तो एक मजबूत शृंखला का रूप लेती है। जरा सोच कर देखें कि यदि हर व्यक्ति ऐसा ही सोचे तो सतत विकास की परिकल्पना हमें किताबों में नहीं बल्कि अपने आस-पास नजर आने लगेगी। कुछ ऐसा ही सोचकर एक विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने अपने विद्यालय की प्रमुख दीवार पर कुछ ऐसे विचार लिखवाए :

मेरे कदम जब भी बढ़े, धरती माँ की ओर बढ़े :

- क्या आज मैंने नहाते समय पानी बर्बाद किया ?
- क्या आज मैंने कमरे से निकलते समय पंखा/ बिजली बंद की ?
- क्या आज मैंने खाना बर्बाद किया ?
- क्या आज मैंने बेवजह पौधों / पत्तियों को तोड़ा ?
- क्या आज मैंने बेवजह किसी जानवर को सताया ?
- क्या आज मैंने बेवजह कागज़ बर्बाद किया ?
- क्या मैं बाज़ार हमेशा थैला लेकर जाता हूँ / जाती हूँ ?

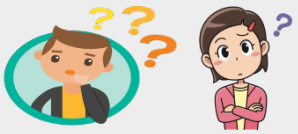

How many Carbon Footprints did I leave ?

एक प्रधानाध्यापक द्वारा किया गया यह प्रयास सराहनीय है। यदि प्रत्येक दिन हम इन बातों को देखकर एक गतिविधि या खेल के रूप में ही सही पर अगर अपनी आद्तों का मूल्यांकन करें तो क्रमशः हमारी जीवन शैली में भी आवश्यक परिवर्तन होने लगेंगे। और अगर हर बच्चे या व्यक्ति के जीवन में ये परिवर्तन होने लगे तो एक समाज के रूप में हम सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ने लगेंगे।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सतत विकास का महत्वपूर्ण आधार है। शिक्षा ही विविध विषयों में हमारी जागरूकता, दक्षता एवं संवेदनशीलता का विकास करके हमें आने वाले भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करती है। शिक्षा साक्षरता का पर्याय नहीं बल्कि हमारी बौद्धिक क्षमता, व्यावहारिक दक्षता एवं गुणवत्तापूर्ण जीवन शैली के निरंतर

विकास की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया की सफलता ही सतत विकास का परिचायक है जहाँ एक प्रधानाध्यापक का नेतृत्व विद्यालय को जीवंतता प्रदान करता है। एक प्रधान अध्यापक के रूप में हमारी कार्यकुशल प्रबंधन शैली के साथ-साथ हमारा संयमित एवं संवेदनशील व्यक्तित्व ही सतत विकास के सभी सोपानों के प्रति हमारी सफलता सुनिश्चित करने में सहायता करेगा।

***

MCQs

आशा है हम सतत विकास की अवधारणा एवं उससे जुड़े विविध पक्षों को भली भांति समझ चुके हैं। आइये निम्नलिखित प्रश्नों के माध्यम से हम अपनी समझ का आकलन करने का प्रयास करें।

1. **नीचे दिए गए कथन में से कौन सा कथन सत्य है ?**
   a. भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं से समझौता किये बगैर वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करना सतत विकास है।
   b. भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं से समझौता करके वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करना सतत विकास है।
   c. वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं से समझौता करके भावी पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करना सतत विकास है।
   d. उपरोक्त सभी कथन सही हैं।

2. **निम्नांकित में से कौन सा उद्देश्य सतत विकास के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्य नहीं है ?**
   a. साफ़ पानी एवं स्वच्छता का विकास
   b. आधुनिक हथियारों का विकास
   c. खाद्य सुरक्षा
   d. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना

3. **संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निर्धारित शिक्षा का कौन सा स्तम्भ संस्कृत के शब्द 'नौ भुनक्तु' की अवधारणा को स्थापित करता है ?**
   a. Learning to Learn
   b. Learning to Do
   c. Learning to Be
   d. Learning to Be Together

4. **विद्यालय में छात्र / छात्राओं के हस्त कौशल के विकास को प्रोत्साहित करने से सतत विकास के किस उद्देश्य की प्राप्ति होगी ?**
   a. पर्यावरण संरक्षण
   b. उद्यमिता, सृजनात्मकता एवं भौतिक संरचना का विकास
   c. खाद्य सुरक्षा
   d. न्याय एवं शांति

5. **पृष्ठ संख्या-11 पर दिए गए प्रसंग में 'सुरती' की शिक्षा बाधित होने से सतत विकास के कौन से लक्ष्य प्रभावित होंगे ?**
   a. लैंगिक असमानता के उन्मूलन का उद्देश्य

b. सामाजिक असमानता के उन्मूलन का उद्देश्य
c. केवल 'क'
d. 'क' एवं 'ख' दोनों

6. विद्यालय भवन की किस आधारभूत संरचना द्वारा 'स्वच्छ एवं हरित ऊर्जा' के उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है ?

a. वर्षा जल के प्रबंधन द्वारा
b. वृक्षारोपण द्वारा
c. विद्यालय परिसर में स्वच्छ पेय जल की व्यवस्था द्वारा
d. विद्यालय की छतों पर सोलर पैनल की व्यवस्था द्वारा

7. पृष्ठ संख्या 14 पर दिए गए उद्धरण में सतत विकास के किन उद्देश्यों को लक्ष्य किया जा रहा है ?

a. पर्यावरण संरक्षण
b. सहयोग एवं साहचर्य
c. जलीय जीवों का संरक्षण
d. इनमें से सभी

8. 'कार्बन फुटप्रिंट' की अवधारणा हमें सतत विकास के किस उद्देश्य को पूरा करने में सहयोग देती है ?

a. सामजिक असमानता का उन्मूलन
b. लैंगिक असमानता का उन्मूलन
c. विवेकपूर्ण उपभोक्तावादी संस्कृति का निर्माण
d. गरीबी उन्मूलन

9. 'विद्यालय एवं सतत विकास' की आधारशिला है –

a. विद्यालय भवन में लगा सोलर पैनल
b. विद्यालय में संचालित मीना मंच
c. विद्यालय में मिलने वाला मध्याहन भोजन
d. विद्यालय में पढने वाले सभी छात्र / छात्राओं के दैनिक व्यवहार में आने वाला गुणकारी परिवर्तन

10. एक सफल प्रधानाध्यापक की पहचान –

a. उसके द्वारा किया गया वित्तीय प्रबंधन है।
b. उसके द्वारा संचालित सरकारी कार्यक्रम हैं।
c. उसके द्वारा विकसित भौतिक सुविधाएं हैं।
d. उसके दूरदर्शी एवं संवेदनशील नेतृत्व के आधार पर छात्र / छात्राओं के जीवन में होने वाले गुणकारी परिवर्तन हैं।

***

डिजाइन एवं ग्राफिक्स : रवि रौशन कुमार